इकाई 3 शंकर एवं विष्णु

इकाई की रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय का सामान्य परिचय

3.4 रुद्रों में शंकर

3.5 परब्रह्म परमात्मा नारायण

3.6 नारायण की तीन भूमिकायें

3.7 विष्णु पुराण में शंकर तथा विष्णु, शिव तत्त्व का विवेचन

3.8 विष्णु पुराण तथा भागवत महापुराण में शंकर तथा विष्णु

3.9 शंकर तथा विष्णु का परस्पर सम्बन्ध तथा ऐक्य

3.10 सारांश

3.11 शब्दावली

3.12 सन्दर्भ ग्रन्थ

3.13 बोध प्रश्न

3.1 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करके आप जान सकें कि :

1. शंकर तथा विष्णु से प्रमुख देवता हैं इनका परिचय क्या है?
2. इनके कार्य तथा गुण क्या है?
3. दोनों के बीच अंतर तथा सम्बन्ध क्या है?
4. विष्णु पुराण, श्रीमद्भगवद्पुराण तथा शिव पुराण, महाभारत (गीता सहित) व रामायण तथा रामचरित मानस में शंकर तथा विष्णु का वर्णन किस प्रकार हुआ है?
5. शंकर तथा विष्णु के नेतृत्व गुणों से आप क्या सीख सकते हैं?

3.2 प्रस्तावना

हिन्दू शब्द किसी पंथ का प्रतीक नहीं है। यह एक सुसंस्कृत जीवन शैली का प्रतीक है जो सर्वपंथ समभाव में मानता है। पंथ पाँच हैं– वैष्णव, शैव, सौर, गाणपत्य तथा शाक्त। वैष्णव पंथ के प्रमुख देवता विष्णु हैं। शैव पंथ के मुख्य देवता शंकर (शिव/महादेव) हैं। गाणपत्य पंथ के प्रमुख देवता गणेश हैं। शाक्त पंथ की मुख्य देवता दुर्गा है। सौर पंथ के मुख्य देवता सूर्य है।

इन सभी पंथों तथा इनके उपपंथों में कट्टर पंथियों में झगड़े खड़े कराये। परन्तु यदि जगद्गुरु शंकराचार्य ने पंचदेव पूजा का विधान करके पाँचों पंथों के बीच एकता/समरसता स्थापित करने का अच्छा प्रयास किया।

गीता बहुत आदरणीय ग्रंथ है क्योंकि यह विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण के श्रीमुख की वाणी है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में स्वयं अपनी विभूतियों का वर्णन करते हुए अर्जुन से कहा, ''रुद्राणां शंकरश्चास्मि'' अर्थात् रुद्रों में मैं शंकर हूँ। (गीता 10.23) विष्णु तथा शंकर में कोई अंतर नहीं है यह बात गीता में कहकर श्रीकृष्ण ने सौहार्द स्थापित करने का प्रयत्न किया है।

18 पुराणों में एक समस्या है। प्रत्येक पुराण का सम्बन्ध किसी एक देवता को सर्वश्रेष्ठ बतलाने से है। कहीं–कहीं अन्य देवताओं की निंदा कर के अपने प्रधान देवता/देवी को सर्वोत्तम सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है। इससे धार्मिक समरसता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। परन्तु महर्षि पराशर द्वारा रचित विष्णु पुराण इसका अपवाद है। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने महादेव के साथ अपनी अभिन्नता प्रकट करते हुए श्रीकृष्ण–बाणासुर संग्राम में कहा है, ''हे शंकर! यदि आपने बाणासुर की जीवित रहने का वर दिया है तो वह जीवित रहे। आपके वचन का मान रखने के लिए मैं सुदर्शन चक्र को रोक देता हूँ। आपने इसे अभय दिया है तो मैंने भी समय दे दिया। हे शंकर! आप अपने से मुझे सर्वथा अभिन्न देखें। आप भली प्रकार समझ लें कि जो मैं हूँ सो ही आप हैं। वह सम्पूर्ण जगत्, देव, असुर, मनुष्य आदि कोई भी मुझसे भिन्न नहीं है।'' (विष्णु पुराण अंश 5, अध्याय 33, श्लोक 46–48)

श्रीकृष्ण ने गीता में शंकर को रुद्रों में अपनी विभूति कहकर वैष्णों तथा शैव दोनों पंथों के बीच समरसता स्थापित करने का प्रयास किया है।

अतः हम विष्णु के समावतार पर विचार करें। राक्षस राज शिव–शक्ति का महान् उपासक है। श्रीराम शिव को अपना आराध्य देव कहते हैं। लंका युद्ध के पहले रामेश्वरम में शिव लिंग की स्थापना/पूजा स्वयं करते हैं तथा स्पष्ट घोषण करते हैं–

''शिव समान प्रिय मोहि न दूजा।''

शिव द्रोही मम दास कहावा। सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा।।

शंकर विमुख भगति चह मोरी। सो नारकी मूढ़ मति तोरी।। (लंका कांड 1, 4)

''शिव से द्रोह करें तथा मेरा (राम का) भक्त कहलावे वह मुझे सपने में भी नहीं पा सकता। शंकर का विरोध करके मेरी भक्ति चाहे वह नरक का जीव मूर्ख कम बुद्धि (दुर्मति) है।''

शंकर तथा विष्णु दोनों के बारे में आप इस इकाई में और विस्तृत अध्ययन करेंगे।

हम उन कारणों पर भी विचार करेंगे जिनसे पंथों के बीच सौहार्द व समरसता कम हुई या संघर्ष बढ़ा।

3.3 विषय का सामान्य परिचय

आपको अब यह जानना है कि शंकर ग्यारह रुद्रों में श्रीकृष्ण की विभूति हैं, तो ग्यारह रुद्र कौन–कौन हैं? शंकर तो सभी रुद्रों में क्या विशेषतायें हैं? जिसके कारण श्रीकृष्ण अपनी विभूति कहते हैं? इस जानकारी के लिए आपको विष्णु पुराण, शिव पुराण, श्रीमद्भागवत महापुराण आदि में जाना होगा।

शिव परिवार एक पूर्ण परिवार है। इससे आज क्या सीख सकते हैं? शिवलिंग स्वरूप पंचायतन सहित साकार पूजा जाता है। शिव के प्रतीकों से नेता क्या सीख सकते हैं? विष्णु के नेतृत्व गुण क्या हैं? उनका कल्याण स्वयप क्या है? शंकर तथा विष्णु में क्या

भेद तथा असमानतायें हैं? शंकर तथा विष्णु की भूमिकायें क्या हैं? इनके अवतार तथा विभिन्न स्वरूप क्या हैं? यह सब आगे इस इकाई में अध्ययन करेंगे।

3.4 रुद्रो में शंकर

ग्यारह रुद्रों के नाम क्या है? रुद्रों की उत्पत्ति कैसे हुई? और सब देवता कहलायें तो शिव महादेव कैसे कहलायें?

ग्यारह रुद्रों के नाम, स्थान तथा परिवारों के बारे में आप विष्णु पुराण अंश के अध्याय 4 से जान सकेंगे।

तामस सर्ग के कारण ब्रह्म चिंता मग्न हो गये। मेरे जैसा पुत्र हो जो सृष्टि सृजन के कार्य को आगे बढ़ा सके। जब ब्रह्मा ऐसा सोच रहे थे तभी उनकी गोद में नील लोहित वर्ण के एक झलक का प्रादुभार्व हुआ। वह जोर–जोर से रोने लगा। रोता हुआ इधर–उधर दौड़ने लगा। ब्रह्मा ने पूछा, ''तूं क्यों रोता है?'' बालक ने कहा, ''आप मेरा नाम रखो। ब्रह्म से कहा, ''तेरा नाम रुद्र है। अब रो मत। धैर्य धारण करे।'' ब्रह्मा के ऐसा कहने के बाद भी वह बालक सात बार और रोया। ब्रह्मा ने उसके सात नाम और रखे तथा उनके स्थान तथा पुत्र निर्धारित किये। यथा–

रुद्रों के नाम (7)	भव	शर्व	ईशान	पशुपति	भीम	उग्र	मध्मेव
रुद्रों के स्थान (मूर्ति के)	सूर्य	जल	पृथ्वी	वायु	अग्नि	आकाश	चन्द्रमा
पत्नियाँ	सुवर्चला	उषा	विवेशी	अपस	शिवा	स्वाहा	दिशा
पुत्र	शकी	शुक्र	लोहितार्थ	मनोजन	स्कंद	सर्ग	सर्ग

रुद्र– भगवत रुद्र ने प्रजापति दक्ष की पुत्री से विवाह किया। सती ने पिता दक्ष के यज्ञ में शिव का अपमान होने पर देह त्याग कर दिया। यही हिमाचल की पत्नी मैना के गर्भ से उमा (पार्वती) रूप में जन्मी। उनका पुनः शिव से ही विवाह हुआ।

यज्ञ में दीक्षित ब्राह्मण	चन्द्रमा
दीक्षा	रोहिणी
संतान	सुधा

(विष्णु पुराण, अंक–1, अध्याय 8, श्लोक 1–14)

महादेव शंकर के 11 रुद्रावतार निम्नलिखितहैं :– कपाली, पिंगल, भीम, विसपाश्ता, विलोहित, शास्त्रा, अस्त्रपाठ, अहिर्बुध्न्य, शंभु, छंद तथा भव। इनकी पत्नियाँ क्रमशः धी, धृति, उश्ना (रसाला), उमा, जियुत, सर्पी, इसा, अंक्षिता, लेखनी, सुधा तथा दीक्षा हैं।

ग्यारहवें रुद्र के अवतार हुए बुद्धिमान हनुमान जिनका विस्तार से अध्ययन ईकाई 2 में आप कर चुके है।

ग्यारह रुद्रों को ब्रह्मा ने आपके शरीर ह्रदय तथा पांच ज्ञानेन्द्रियों के स्थान आवंटित किये हैं। इनके नाम हैं– अजा, एकपक्ष, अहिर्बुध्न्य, त्वष्टा, रुद्रा, हरा, शंभु, त्रयंबक, अपराजित, ईशान, त्रिभुवन।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ग्यारह रुद्रों के नाम महाकाल, तारा, बल, भुवनेश, षोडश विभा, भैरव, छिन्नमस्तक, बकलामुख, मतंग, कमल तथा हनुमान भी बताये गये हैं।

कश्यप ऋषि की पत्नी सुरुचि के गर्भ से शिव का जन्म धरती पर होना भी बताया जाता है जिन्होंने असुरों से युद्ध कर देवताओं तथा मनुष्यों की रक्षा की। (गूगल सर्च से)

आप विष्णु पुराण को अधिक प्रामाणिक स्रोत मान सकते है।।

अब आज शिव से पंचायत के बारे में जानें–

किसी भी शिवालय के बाहर नन्दी विराजमान होते हैं। इन्हें धर्म का रूप कहते हैं। इनके आगे कछुआ की मूर्ति (कूर्म) होती है जो इन्द्रिय संयम का प्रतीक है।

शिवालय के गर्भगृह में माता पार्वती (शक्ति), श्री गणेश (बुद्धि), कार्तिकेय (पराक्रम), कहीं–कहीं हनुमान (महावीर) विराजते हैं। केन्द्र में लिंग स्वरूप शिव विराजते हैं जिनके शीश पर गंगा विराजती है।

आप ध्यान से देखें कि सभी का ध्यान शिव (कल्याण) पर केन्द्रित होता है। शिव कल्याण रूप हैं। वे नन्दी (धर्म) की सवारी करते हैं।

शिक्षा : धर्म, संयम, शक्ति, बुद्धि, शौर्य सबका सर्वोपरि लक्ष्य जन कल्याण या विश्व का कल्याण है।

शिव परिवार पर आप ध्यान दें। शिव का वाहन नन्दी वृषभ है तो पार्वती का वाहन सिंह है। दोनों आपस में शत्रु हैं। श्रीगणेश का वाहन मूषक है तो कार्तिकेय का वाहन मयूर है। मयूर तथा शिव के नाग आपस में शत्रु हैं। नाग तथा चूहा भी आपस में शत्रु हैं। इतने विरोधाभासों के बीच समन्वय करके परिवार को एक रखे, शांत रहे, वही शिव है। एक परिवार को चलाना शिव से सीखें।

पार्वती श्रद्धा है, शिव विश्वास है। इनके पुत्र गणेश हैं जिनकी पत्नियाँ ऋद्धि–सिद्धि हैं। ऋद्धि–सिद्धि व श्री गणेश के पुत्र हैं शुभ–लाभ। यही सुख समृद्धि का मार्ग है। श्रद्धा–विश्वास व त्याग/विरक्ति सुखी पारिवारिक जीवन के मूलाधार हैं।

अब आप शिव के स्वरूप का ध्यान करें। एक अच्छे नेता के गुण प्रकट हो जायेंगे जिनका अनुसरण करके आप अच्छे नेता बन सकते हों।

अयोध्याकांड के प्रारंभ में संस्कृत में शिव स्तुति की गई है वह निम्नलिखितहैंः–

''जिनकी गोद में हिमालय सुता पर्वती, मस्तक पर गंगा, ललाट पर नया चन्द्रमा, कंठ में हलाहल विष तथा वक्षःस्थल पर सर्पराज शेष शोभा पा रहे हैं। वे सर्वव्यापक, कल्याणस्वरूप, चन्द्रमा के समान गौर वर्ण श्री शंकर सदा मेरी रक्षा करें।''

अब प्रबन्ध/नेतृत्व के संकेत भाव ग्रहण करें–

1. हिमाचल – स्थिरता
2. पार्वती – शक्ति की करुणा
3. गंगा – शीतल व पवित्र मस्तिष्क
4. नया चन्द्रमा – विकासोन्मुख नेतृत्व

5. कंठ में विष – बाहर थूंको तो बदनामी होती है, पेट में उतारो तो मृत्यु भय। संस्था की कमियों को कंठ में रोके रखो।
6. वक्षस्थल पर शेष नाग – संस्था के शेष भागों से भी काम लेने की क्षमता।
7. भस्म – संसार का अंतिम सत्य भस्म ही है।
8. सुरश्रेष्ठ – सर्वोच्च सत्ता। ऊपर कोई सत्ता नहीं।
9. सबके ईश्वर – आदेश देने तथा पालना मांगने का अधिकार।
10. संहार – सृजामात्मक विनाश।
11. सर्वव्यापक – वायु की तरह सर्वव्यापक। अव्यक्त सत्ता व शक्ति। सब जानकारी सेवा। सब पर निगाह रखना।
12. कल्याण स्वरूप – सब हितधारकों का सन्तुलित कल्याण। केन्द्र में भी कल्याण का भय।
13. चन्द्रमा के समान गौरवपूर्ण – आकर्षक व्यक्तित्व जिसे देख कर सब प्रसन्न हों।
14. डमरू – प्रभावी सम्प्रेषण/भाषा पर नियंत्रण।
15. त्रिशूल – त्रिगुणातीत। प्रकृति के तीन गुणों से परे।
16. वृषभ वाहन – धर्म के कल्याण को अधिक महत्त्व।
17. तीसरा नेत्र – दूर दृष्टि।

अब आप समझें कि सब देवता हैं तो महादेव कैसे हुए? परोपकार से महादेव बने। समुद्र मंथन में निकले हलाहल विष को किसी भी देवता व असुर ने ग्रहण नहीं किया। तब सृष्टि की रक्षा के लिए शंकर ने उसे ग्रहण किया। नीलकंठ बने। अतः महादेव कहलाये।

जिसकी शिव की तरह भौतिक आवश्यकतायें नहीं हों वही उच्च पद वाला नेता बनने के योग्य होता है। शंकर के इतने गुणों से अब आप समझ गये होंगे कि श्रीकृष्ण ने गीता में रुद्रों में अपनी विभूति शंकर को सत्य ही कहा है।

3.5 परब्रह्म परमात्मा नारायण

परब्रह्म, परमात्मा, पुरुषोत्तम, नारायण, शुद्ध, अविनाशी, अविकारी, अव्यक्त सर्वदा सत्य एक ही हैं। वे ही सृष्टि के कार्य तथा कारण रूप निमित्त कारण तथा उपादान कारण दोनों हैं। वे ही सामग्री बने, वे ही प्रक्रिया बने तथा वे ही सृष्टि बने हैं। सृजन, पालन तथा प्रलय रूप तीन कार्य करने के लिए तीन देवता/ईश्वर ब्रह्मा (रजोगुण से सृष्टि करना), विष्णु (सत्त्वगुण से पालन व व रहना, चेतना या आत्मा वासुदेव रूप सब चर–अचर या जड़–चेतन सृष्टि में व्याप्त) तथा शिव (तमोगुण से प्रलय) के कार्य सम्पन्न करते हैं। यह सब लीला नारायण की सदा चलती रहती है। शंकर के गुण भी नारायण/ब्रह्मा की तरह ही हैं, अजन्मा, निर्गुण, अविकारी, अनन्य व शाश्वत्।

जो प्रकृति से परे, परम श्रेष्ठ, आत्मा–परमात्मा, वासुदेव सर्वव्यापक हैं। वह रूप, वर्ण, काम, गुण, विशेषण सहित है। जन्म, वृद्धि, परिणाम क्षय, मृत्यु/नाश के 6 विकारों से रहित है। वे वासुदेव नित्य हैं, अजन्मा है, अक्षय है, अनन्त है, निर्गुण है, अव्यय है, एकरस है तथा निर्मल परब्रह्म है। साक्षी पुरुष (आत्मा) तथा काल (समय) रूप है। काल उनका परम रूप है। वह स्वयं प्रकाशित परमात्मा का परमपद है।

3.6 नारायण की तीन भूमिकायें

प्रलय काल में न दिन न रात था न आकाश था, न पृथ्वी थी, न अन्धकार, न प्रकाश था। इन्द्रियातीत पर ब्रह्म भी था। प्रकृति साम्यावस्था में थी। पुरूष (आत्मा)। विकारी प्रकृति व अविकारी पुरुष में परमात्मा नारायण में प्रवेश किया। काल की सक्रियता से सृष्टि निर्माण प्रारंभ हुआ। सर्वकाल आने पर गुणों की साम्यवस्था प्रधान जब विष्णु के क्षेत्रज्ञ रूप से अविकसित हुआ तो उसमें महत्त्व उत्पन्न हुआ। उस महात् को प्रधान तत्त्व (आत्मा) से आवृत किया। महत्त्व सत, रज, तम भेद से तीन प्रकार का होता है। महात् से तीन गुणों वाला तीन प्रकार का अहंकार उत्पन्न हुआ। सब भूतों व इन्द्रियों आदि का यह कारण है। प्रदान तथा अहंकार महात् आवृत है। विष्णु का प्रथम कार्य सब प्राणियों के शरीरों में प्रधान (आत्मा) रूप में चेतना का आसान करने का है। यह चेतना है तब तक ही जीवन होता है। वैश्वानर अग्नि रूप जरूसहित जब प्राणियों का पालन विष्णु करते हैं। नारायण ही ब्रह्म रूप में रजोगुण की सहायता से सृष्टि का सृजन करते हैं। विष्णु रूप में सत्त्वगुण से चेतना देने व पालन करने का कार्य करते हैं। रुद्र रूप में तपोगुण धारण कर प्रलय करते हैं। ब्रह्मा के दिन के प्रारंभ में सृजन होता है तथा ब्रह्मा की रात्रि के प्रारंभ में प्रलय होता है। रात्रि में सृष्टि बीज को विष्णु सुरक्षित रखते हैं। ब्रह्मा की रात्रि के अन्त व दिन के प्रारंभ में सृजन प्रारंभ होता है।

नारायण एक हैं तथा वे ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में सृजन, पालन व प्रलय की भूमिका पूरी करते हैं।

3.7 शिवपुराण में शंकर तथा विष्णु, शिव तत्त्व का विवेचन

महर्षि वेद–व्यास द्वारा रचित शिवपुराण में प्रधान देवता शिव है। विष्णु का वर्णन गौण रूप से हुआ है। शिव पुराण में भगवान शिव के विभिन्न अवतारों, ज्योतिर्लिंगों, भक्ति, भक्तों, शिवतत्व का वर्णन हुआ है। शिव के कल्याणकारी स्वरूप का तात्विक विवेचन किया गया है। शिव को पंचदेवों में मुख्य देवता अनादि सिद्ध परमेश्वर के रूप में स्थापित किया गया है। शिव को शाश्वत्, स्वायंमुख, सर्वोच्च सत्ता, विश्व चेतना तथा ब्रह्माण्ड के अस्तित्व का आधार बतलया गया है। ब्रह्मा–विष्णु को गौण महत्त्व दिया गया है। ऊँ कार में ब्रह्मा–विष्णु तीनों को एक बताया गया है। शिव आरती में भी वर्णन हुआ है।

शिव पुराण में ब्रह्मा से रुद्र की उत्पत्ति का ग्यारह रुद्रों का वर्णन नहीं मिलता। उसमें शत रुद्र संहिता में शिव के पाँच अवतारों का वर्णन है जिनके नाम हैं– सओजात, वामदेव, तत्पुरुष, अघोर तथा ईशान।

सद्योजात अवतार शिव से ब्रह्मा को ज्ञान तथा सृष्टि रचना की शक्ति दी। यह अवतार 19वें कला 'श्वेत लोहित कला' में हुआ।

रक्त नामक 21वें कला में शिव का जयदेव अवतार हुआ। अपने ब्रह्मा के ज्ञान तथा सृष्टि रचना की शक्ति दी।

पीतवस्था नामक 21वें कला में शिव का तत्पुरुष नामक अवतार हुआ। उनके योग मार्ग के प्रवर्तक दिव्य पीत वस्त्र धारी कुमार उत्पन्न हुए।

शिव नामक 22वें कला में शिव का अघोर नामक अवतार हुआजो काले रंग के शरीर का (कृष्ण वर्ग) था। उन्होंने ब्रह्मा की सृष्टि रचना के लिए घोर नामक योग का प्रयार किया।

ब्रह्मा का दूसरा कला प्रारंभ हुआ। इस कल्प का नाम विश्वरूप था। घोर नाद करने वाली विश्वरूप सरस्वती देवी प्रकट हुई। शिव का ईशान अवतार हुआ जो शुद्ध स्फटिक समान उज्ज्वल था। उनके चारों पत्र योगी को ईशान अवतार सबसे बड़ा है। जो क्षेत्रज्ञ है। दूसरा क्रम तत्पुरुष का आता है। यह सांख्य सर्वज्ञ में स्थित है। तीसरा आघोर अवतार बुद्धि तत्त्व का विस्तार कर उसमें स्थित रहता है। शिव का वामदेव अवतार अहंकार का अधिष्ठान है। ईसान अवतार कर्ण, वाणी तथा आकाश का अधीश्वर है। कार्यदेव अवतार रसना, पायु, रस और जल का स्वामी है। प्राण, उपस्थ, गंध और पृथ्वी का ईश्वर शिव का स्वओजात रूप है। भुक्ति तथा मुक्ति की कामना पूर्ति के साथ परमगति के लिए शंकर के इन पाँच स्वरूपों की वेदना करें। (अध्याय 1)

शास्त्र संहिता में शिव की अष्टमूर्तियों का वर्णन आता है तथा अर्द्धनारीश्वर रूप का भी विस्तृत वर्णन हुआ है। पूरा संसार शिव की आठ मूर्तियों का ही रूप है। ये आठ मूर्तियाँ हैं शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान तथा महादेव। इसमें तथा विष्णुपुराण में वर्णित आठ रुद्रों में बहुत समानता है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, क्षेत्रज्ञ (आत्मा), सूर्य, चन्द्रमा, अष्टमूर्ति शिव में क्रमशः अधिष्ठित हैं। शिव का यह कल्याणकारी विश्वभर रूप ही चर–अचर विश्व को धारण करता है।

'भव'– शिव का सलिलात्मक रूप पूरे जगत् को जीवन देता है।

'उग्र'– शिव में व्याप्त तथा भरण–पोषण करता है।

भीम– सबको अवकाश देता है जो सर्व व्यापक आकाश रूप है। यह भूत वृन्द का भेदक है।

पशुपति – समस्त आत्माओं का अधिष्ठान, सब क्षेत्रों में रहने वाला तथा जीवों के भवपाश को काटने वाला है।

ईसान – सूर्य रूप सारे जगत् को प्रकाश देता है।

महादेव – अमृत रश्मियों वाला चन्द्रमा सारे विश्व को आल्हाद देता है।

आत्मा– यह सभी रूपों या अन्य मूर्तियों की व्यापिका है।

समस्त विश्व शिव मय है। शिव पूजन से सम्पूर्ण शिव परिपुष्ट हो जाता है। किसी को भी आप कष्ट देंगे तो शंकर को कष्ट होगा। ऐसा कभी मत कीजिए।

जब सृष्टि का विस्तार ब्रह्मा नहीं कर सके तब मैथुनी सृष्टि के सृजन के लिए शिव ने अर्द्धनारीश्वर रूप धारण करके ब्रह्मा के समक्ष प्रकट हुए। ब्रह्मा ने शिव–शिवा को सृष्टि विस्तार का निवेदन किया। सृष्टि का विस्तार इन्हीं से हुआ तथा होता है।

इसके बाद वाराह कला में शिव के 9 अवतार होने का वर्णन मिलता है। ये हैं श्वेत महामुनि, सुलर, देसज, सुहोत्र, कंक, लोकायी, दधिवाहन, ऋषभ। ये सब योगेश्वर होंगे तथा व्यास के कार्य में सहायता करेंगे। दसवें से 28वें अवतार तक शिव के सभी योगेश्वर अवतार होंगे। नंदीश्वर, काल भैरव, गृहपति, महाकाल, ग्यारह रुद्र अवतार, दुर्वासा अवतार (क्रोधावतार) तथा हनुमान (सेवक) अवतार, पिप्लाद, श्लिेश्वर, यतिनाथ, हंस, कृष्णदर्शन, अवधूतेश्वर, भिक्षुव्यक्तिार, सुरेश्वर अवतार, किरात अवतार तथा बारह ज्योर्तिवासियों के अवतारों का वर्णन शतरुद्र संहिता में नंदीश्वर ने किया है।

अब आप शिवपुराण में वर्णित शिव तत्त्व को समझें। शिव–सती विवाह के अवसर पर विष्णु बोले, ''शिव प्रधान (आत्मा) तथा अप्रधान (प्रकृति) से परे हैं। भाग रहित है। आप ज्योतिर्मय रूप परमात्मा हैं। हम तीनों (ब्रह्मा, विष्णु, शंकर) देवता के अंश है। हम

सृष्टि, पालन तथा संहार करने के कारण भिन्न लगते हैं परन्तु हम तीनों अभेद हैं। आप ही ब्रह्म हैं। निर्गुण ब्रह्म आप हैं तथा हम तीनों आपके ही अंश हैं। जैसा शरीर के अनेक अंग होते है परंतु सब मिलकर शरीर ही हैं। इसी प्रकार हम तीनों भी आप परमेश्वर के ही अंश है। आप ज्योतिर्मय, आकाश जैसे सर्वव्यापक मिर्लेप, स्वयं ही क्षमता आप, पुराण, कूटस्थ, अव्यक्त, अनन्त, नित्य तथा दीदी आदि विशेषणों से रहित निर्विशेष ब्रह्म है। आप ही सब कुछ है।'' (शिव पुराण, रुद्र संहिता, अध्याय 19)

दक्ष यज्ञ सम्पन्न कराने तथा दक्ष द्वारा शिव की स्तुति होने के बाद शिव ने स्वयं भी शिवतंत्र का वर्णन निज शब्दों में किया, ''कहा! मैं ईश्वर हूँ, स्वतंत्र हूँ परन्तु भक्तों के आधीन हूँ। मैं आत्मज्ञ हूँ। मैं ज्ञान से पाने योग्य हूँ। सकाम कर्म से अज्ञानी मुझे वेद, यज्ञ, दान, तप से कभी नहीं पा सकते। मेरा अत्यन्त गोपनीय रहस्य अब तुमझे प्रकट करता हूँ। मैं सबका आत्मा, ईश्वर तथा साक्षी हूँ। स्वयं प्रकाश तथा निर्विशेष हूँ। मैं ही जगत् की सृष्टि ब्रह्म रूप से संहार करता हूँ। हम तीनों में कोई भेद नहीं है। ऐसा जाने वहीं शांति को प्राप्त करता है। भेद, बुद्धि वाला नरक को जाता है। उसे तत्वज्ञान प्राप्त नहीं होता।'' (शिवपुराण, रुद्रसंहिता, अध्याय 43)

3.8 विष्णु पुराण, श्रीमद्भागवत पुराण में शिव चरित्र का वर्णन

श्रीमद्भागवत पुराण भी महर्षि वेद व्यास द्वारा रचित है। इसे पुराण शिरोमणि कहते हैं। इसके चौथे खण्ड के अध्याय 1–7 में सती चरित्र का विस्तार से वर्णन हुआ है। इतना महत्त्व विष्णु के अवतारों को शिव पुराण में नहीं मिला है। विष्णु पुराण तथा भागवत पुराण दोनों में उषा–अनिरुद्ध विवाह प्रकरण में श्रीकृष्ण तथा शिव के बीच युद्ध का वर्णन हुआ है। (श्रीमद्भागवत महापुराण, दशम स्कन्ध, अध्याय 63)

विष्णु पुराण तथा भागवत महापुराण में विष्णु के मुख्य 10 अवतारों का वर्णन हुआ है। ये हैं मत्स्यावतार, वराह अवतार, कूर्म अवतार, नृसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध तथा कल्कि। इनके अतिरिक्त भगवान विष्णु के 24 अवतारों का भी वर्णन हुआ है।

1. सनकादि, 2. मत्स्यावतार, 3. नारद, 4. नर–नारायण, 5. कपिल, 6. दत्तात्रेय (ब्रह्मा, विष्णु, शिव तीनों का एक ही अवतार), 7. कूर्म, 8. धनवन्तरी, 9. मोहिनी, 10. वज्ञावतार, 11. पृथु, 12. वराह अवतार, 13. नृसिंह, 14. हयग्रीव, 15. वामन, 16. श्रीहरि, 17. परशुराम, 18. वेदव्यास, 19. ऋषभदेव, 20. हंस, 21. श्रीराम, 22. श्रीकृष्ण, 23. बुद्ध, 24. कल्कि (आगे होगा)।

यह स्पष्ट है कि शिव के किसी भी अवतार का वर्णन विष्णु पुराण तथा श्रीमद्भागवत महापुराण में नहीं हुआ है। शिव पुराण में भी शिव के अवतार तथा लीलाओं की प्रधानता है।

शंकर की विभूतियों का विस्तार से वर्णन शिव पुराण में मिलता है जो श्रीकृष्ण गीता में स्वयं की विभूति कहते हैं।

3.8 शंकर तथा विष्णु का परस्पर सम्बन्ध तथा ऐक्य

शंकर तथा विष्णु दोनों ही आपस में एक दूसरे की आराधना करते हैं। दोनों ही अपने भक्तों को भेद न करने का निर्देश देते हैं। भेद करने वाले अज्ञानियों के नरकगामी होने की बात भी कहते हैं। विष्णु का नर अवतार श्रीराम के जन्म के समय शंकर उनका दर्शन करने अयोध्या में आते हैं। श्रीकृष्ण (बाल कृष्ण) का दर्शन करने गोकुल

नन्दभवन पर जाते हैं। राम विवाह में शिव दूल्हे का दर्शन करते हैं।

श्रीकृष्ण की रासलीला में गोपी रूप धारण कर शिव आते हैं। वहीं गोपेश्वर महादेव बन स्थायी हो जाते हैं। श्रीराम रामेश्वरम् ज्योतिर्लिंग की पूजा व स्थापना लेकर युद्ध के पहले करते हैं। श्रीकृष्ण को भी पुत्र पाने के लिए शिव आराधना करनी पड़ती है। महाभारत युद्ध के प्रारंभ से पूर्व स्थाणेश्वर महादेव की पूजा वे पांडवों से कराते हैं। अम्बा माँ की स्तुति अर्जुन से कराते हैं। सीता तथा रुक्मिणी दोनों अंबिका या गौरी पूजन करके आशीर्वाद लेती हैं। पंपा सरोवर पर श्रीराम भी लक्ष्मण सहित नवरात्रि अनुष्ठान करते हैं। श्रीराम की आज्ञा से शिव–पार्वती से विवाह लोक कल्याण हेतु (तरकासुर को मारने के लिए पुत्र होने की देव प्रार्थना) करने की सहमति देते हैं। शंकर तथा विष्णु परस्पर स्वामी–सेवक सम्बन्ध मानते हैं। दोनों में पूजन ऐक्य है। परन्तु शैव तथा वैष्णों के बीच फिर झगड़े क्यों होते हैं?

असुर राज रावण शिव को ही मानते हैं। यही हाल बाणासुर का है। कंस भी शिव को ही मानता है। प्रजापति दक्ष शिव द्रोही बने।

वहाँ का सबसे प्रभावशाली वैष्णव सम्प्रदाय ज.गु. रामानुजाचार्य का है जो शिव पूजक नहीं है। परन्तु ये भी हनुमान को आदर देते हैं।

उत्तर भारत में ज0गु0 रामानन्द, ज0गु0 पी0स0 स्वामी नारायण सम्प्रदाय भी दोनों को ही आदर देते हैं। स्वामी नारायण सम्प्रदाय के कुछ उपासक दोनों को भी नहीं मानते। गुजरात तथा उत्तर में शिव–विष्णु के संयुक्त मन्दिर भी देखने को मिल जाते हैं।

अंतर के कारण सत्त्व गुण– तमोगुण का भेद, पूजा पद्धतियों का भेद (यथा तुलसी, विष्णु को प्रिय ह, शिव को नहीं) शिव बिल्वपत्र प्रिय है। विष्णु वैभवी पूजा प 56 भोग, श्रृंगार प्रिय हैं तो शिव केवल जल अर्पण से ही प्रसन्न हैं। जो पदार्थ किसी भी देवता को प्रिय नहीं ये शिव को प्रिय है। शिव का दरबार सबसे लिए खुला है, सब समय/देवता मनुष्य, योगी, मुनि, यक्ष, राक्षस, आसुर, किन्नर, नाम, भूत, प्रेत पिशाच सबके पूज्य है।

शिव ने अमर कथा (भागवत पुराण) पार्वती को अमरनाथ गुफा में सुनाई थी। उन्होंने कुंभन ऋषि से रामकथा पार्वती की सुनाई थी। शिव परम वैष्णव हैं। कैलाश पति के मानसरोवर तट पर कागभुसुंडी, गरुड़ को राम कथा सुना रहे हैं। काशी में विश्वनाथ, राम नाम सुना कर जीवों को मोक्ष देते हैं। शिव का कल्याण रूप है तो विष्णु का भी कल्याण रूप है।

ज–गु–शंकराचार्य ज्ञान–सन्यास मार्ग के आचार्य हैं इन्होंने पंचदेव पूजा पद्धति मानी है। अन्य जगद्गुरु सब भक्ति मार्ग वाले हैं। वे भी श्री राम–हनुमान, श्रीकृष्ण–शिव की उपासना को मानते हैं।

देश की एकता के हित में चार शंकर मठ ज–गु– शंकराचार्य के बने हैं तो द्वादश ज्योर्तिलिंग तक 52 शक्तिपीठ भी देश की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एकता के आधार बने हैं। शंकर तथा विष्णु दोनों एक ही हैं। दोनों ही परब्रह्म की ही भूमिका के अंग हैं। शैव–वैष्णव भेद का कोई औचित्य नहीं।

3.10 सारांश

श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं ''रुद्राणां शंकरश्चास्मि'' अर्थात् रुद्रों में शंकर मेरी ही विभूति हैं। श्रीराम के आराध्य शिव हैं तो शिव के आसाध्य राम हैं। श्रीकृष्ण भी शिव की पूजा करते हैं तथा शिव उनकी आराधना करते हैं। शंकर तथा विष्णु के बारे में जानने तथा

शिव तत्त्व को समझने के लिए शिवपुराण, विष्णु पुराण, भागवत महापुराण, महाभारत, रामायण का अध्ययन करना होगा।

ग्यारह रुद्रों में शंकर की जानकारी करें। शिव के कल्याणकारी स्वरूप को समझें। शिव के प्रतीक चिन्हों, शिव परिवार आदि से कुछ सीखें। जीवन संवारें। शंकर की स्तुति तुलसी ने अयोध्याकांड में की है। इसमें उच्च नेतृत्व के गुण प्रकट होते हैं। विरोधाभ्यासों में भी परिवार चलाना, शांति से रहना शिव से सीखें।

परब्रह्म, परमात्मा, पुरुषोत्तम, नारायण, वासुदेव रूप को समझें। शिव निर्गुण निराकार, निर्विकार भी है तो लिंग रूप में साकार भी हैं। नारायण एक हैं परन्तु उनकी भूमिकायें तीन हैं– सृजन (रजोगुण ब्रह्म), पालन (सत्त्वगुणी विष्णु) तथा संहार (तमोगुणी शंकर)।

शिवपुराण में शिव तत्त्व, शिव लीला, शिव अवतारों का विस्तृत वर्णन करता है। विष्णु पुराण में भागवत पुराण, विष्णु के 10 मुख्य अवतारों व 24 अवतारों की कथा का वर्णन करते हैं। रुद्र अष्ट मूर्तियाँ जगत् का आधार हैं।

अन्तर के कुछ आधार हैं जो शिव–वैष्णव विवाद का कारण बनते हैं। परन्तु जगद्गुरुओं तथा तुलसी जैसे संतों ने दोनों की एकता मजबूत करने के लिए अच्छे प्रयास किये हैं। शिव के कल्याण स्वरूप तथा विष्णु के कल्याण स्वरूप की एकता समझें। अपने स्वभाव व रूचि के अनुसार आराध्य देव को पूजो पर अन्य की निछा मत कीजिए। राष्ट्र की एकता के लिए वह आवश्यक है।

3.11 शब्दावली

शैव, वैष्णव, नारायण या ब्रह्म, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, साम्प्रदायिक सौहार्द / समरसता।

3.12 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. विष्णु पुराण, हिन्दी टीका, गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. शिवपुराण, हिन्दी टीका, गीता प्रेस, गोरखपुर।
3. श्रीमद्भागवत महापुराण, हिन्दी टीका, गीता प्रेस, गोरखपुर
4. डंदंहमतपंस स्मेवदे तिवउ त्उबींतपजउंदंए भ्पउंसंलंए डनउइंपए 2011
5. भारतीय प्रबन्धन, गुरु तुलसीदास, मीशा (फ्रेंडस), दिल्ली, 2023

3.13 बोध प्रश्न

1. रुद्रों में शंकर श्रीकृष्ण की विभूति हैं। इस कथा को शिव के गुणों द्वारा सिद्ध कीजिए।
2. शैव पंथ तथा वैष्णव पंथमें संघर्ष के कारण बताओ। इसके स्थान पर दोनों पंथों के बीच समरसता के लिए जगद्गुरुओं तथा संतों ने क्या योगदान दिया?
3. शिवतत्त्व का वर्णन कीजिए।
4. ग्यारह रुद्रों के नाम बताओ उनके स्थान, पत्नियों तथा सन्तान का वर्णन कीजिए।
5. विष्णु के दस मुख्य अवतारों के नाम बताओ।
6. विष्णु के 24 अवतारों के नाम बताओ।